भूमण्डलीय ऊष्मीकरण (ग्लोबल वार्मिंग) के कारण, प्रभाव तथा कम करने के उपाय

दीपिका सैनी
रूड़की

भूमण्डलीय ऊष्मीकरण का अर्थ पृथ्वी की जलवायु और महासागर के औसत तापमान में 20वीं शताब्दी से हो रही वृद्धि और उसकी अनुमानित निरंतरता है। हमारी धरती प्राकृतिक तौर पर सूर्य की किरणों से ऊष्मा प्राप्त करती है।

ये किरणें वायुमण्डल से गुजरती हुई धरती की सतह से टकराती हैं और फिर वहीं से परिवर्तित होकर पुनः लौट जाती हैं। धरती का वायुमण्डल कई गैसों से मिलकर बना है जिनमें कुछ ग्रीन हाऊस गैसें भी शामिल हैं।

ये गैसें धरती के वातावरण में आवरण बना लेती हैं। यह आवरण दुष्प्रभावित करने वाली पराबैंगनी किरणों के ओज़ोन आवरण भेजने से पहले ही परावर्तित करने के साथ–साथ धरती से टकराने के बाद लौटती हुई उपयोगी किरणों के हिस्से को रोक लेता है। इन्हीं रूकी गैसों से वातावरण गर्म बना रहता है। इन्हीं सब कारणों से ''ग्लोबल वार्मिंग'' के दुष्प्रभाव शुरू हो गये हैं।

तापमान में वृद्धि समुद्रीय जल स्तर में वृद्धि, खतरनाक महामारियों में वृद्धि, विभिन्न प्रजातियों का विलुप्त होना, पर्वतीय क्षेत्र में प्रदूषण आदि।

इन्हें दूर करने के लिए कुछ उपाय किए जा सकते हैं, जो निम्न हैं :–

- ❖ कचरे का समुचित ढंग से निस्तारण।
- ❖ ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों को प्रोत्साहित करना।
- ❖ प्रदूषण करने वाली गैसों के उत्सर्जन में कमी।
- ❖ ऊर्जा का कम उत्पादन।
- ❖ सी.एन.जी. (CNG) द्वारा प्रचालित वाहनों का इस्तेमाल करना।
- ❖ जंगलों की कटाई रोकना।
- ❖ ए.सी. (AC), फ्रिज fridge का इस्तेमाल कम करना।

सभ्य संसार के किसी भी जन–समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है ।

पं. मदन मोहन मालवीय